श्री प्राणनाथ जी क्या है

श्रीमती प्रेम गुप्ता जालन्धर

कौन क्या है, कैसा है उसके बोलने से ही पता चल जाता है कि उसके अन्दर कौन सी शक्ति बैठी है जैसे—

'मुख बोले से पाइये,
दिल अन्दर दे गुझ।'

जैसे राम भगवान ने स्वयं कहा है-'मैं परमात्मा नहीं हूँ।' आज हिन्दू भले ही भूलकर उन्हें परमात्मा मानता हैं। इसमें दोष राम भगवान का नहीं है। उन्होंने तो स्पष्ट रामायण में कहा है—

नेति नेति कहि वेद निरूपा,
निजानन्द निरुपाधि अनूपा।
शंभू विरंची विष्णू भगवाना,
उपजे जासु अंश तें नाना॥

रामायण के इन वाक्यों से स्पष्ट हो जाता है कि वह परमात्मा नहीं है। गुरुग्रन्थ साहिब में कहा है—

'पार पुरुष का हूँ मैं दासा,
देखन आया खेल तमासा।
जो नर मुझको ईश्वर उचरहैं,
वह नर सीधा नरक को परहैं॥

गुरुग्रन्थ साहिब की वाणी में स्पष्ट कहा है- वो परमात्मा है मैं नहीं हूँ। भले सिख समाज उन्हें परमात्मा मानते हैं। वह स्वयं अन्धकार में हैं। कुरान में तो मोहम्मद साहिब ने स्पष्ट ही कह दिया है मैं अल्ला ताला नहीं, अल्ला ताला का रसूल हूँ। अल्ला ताला फरदा रोज को, जिसको कुरान के हिसाब में १०वीं और ११वीं सदी कहा है, आयेगा। सोई बात बाईबल में भी ईसा मसीह ने कह दी। मैं खुदा का बेटा हूँ। खुदा खुद कल के दिन आयेगा। दुनिया के धर्म ग्रन्थों से यही सिद्ध होता है वह पारब्रह्म ऐसी शक्ति है जब कभी भी करोडों बार दुनिया बनी और बनती रही इसका आगमन न कभी हुआ है न होगा, जैसे हरिवंश पुराण में लिखा है-

'अभाविनो भविष्यन्ति मुनियो ब्रह्म रूपना
उत्पनाये कलयुगे प्राधान पुरुष आश्रय।
योगान तान सर्वांग पुज्यष्यन्ति मानवा,
यस्य पूजा फलम जीव सृष्टि उदाहरणम्॥

उसी बात को रामायण में कहा है।

'कलयुग केवल नाम अधारा,
सुमर सुमर नर उतरहिं पारा॥'

इसी बात को गुरु ग्रन्थ साहिब में कहा है -

'उठ गयी सभा मलेच्छ दी,
कर कूड़ा उपकार।
नेहकलंक जब आयेगा,
महाबली अवतार॥
खाडां जाके हाथ में,
कलगी सोहे शीश।
अंग संग रक्षा करे,
कलगी धर जगदीश।

उसी बारे में खुद मोहम्मद साहिब ने

Nijanand App

कुरान पाक में कहा है- 'ऐ मेरे यारो। अल्ला ताला कयामत के वक्त आयेगा। कयामत फरदा रोज की होगी और फरदा रोज १०वीं और ११वीं सदी की होगी। जब अल्ला ताला खुद आखिरी जमाने के ईमाम मेहदी बनके आयेगें। उसी को बाईबल में 'सेकेण्ड कमिंग आफ क्राइस्ट कहा है यानि ईसा ने खुद कहा–मैं अल्ला के साथ आउँगा। आइये सुन्दर साथ जी अब अपनी बुद्धि की पहचान का समय आया है 'साडी अकल किदां दी है। आओ देखें तो पता चलता है हमारी अकल को क्या हो गया है कि पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने आत्मा के सम्बन्ध से जो कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं हो सकते और उनकी आत्मायें उनसे कभी जुदा नहीं हो सकती। स्पष्ट वेदों में और गीता में लिखा है-आत्मा न परमात्मा। इस कारण से वो यहां आए और आकर श्री देवचन्द्र जी को जो भागवत सुन-सुन कर भागवत के श्लोक-श्लोक में उतर चुके थे और भागवत का कोई गूढ़ रहस्य उनसे छुपा नहीं था। क्योंकि भागवत सुनते १४ वर्ष हो गये थे। अब वही अक्षरातीत श्री राज जी महाराज को आवेश स्वरूप जो कभी नित्य वृंदावन योगमाया के ब्रह्माण्ड में बांके बिहारी के तन में बैठकर श्यामा जी के साथ जब वो श्यामा जी राधिका जी के तन में थी लीला किया था और ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूरी न होने के कारण यह तीसरा ब्रह्माण्ड हट के रचा गया। अब इसमें वही श्यामा जी देवचन्द्र जी के तन में बैठकर भागवत सुन रही थी तो अब जब उमर ४० साल की हो गई तो १६७८ में आसव सदी अकादशी सोमवार के दिन और प्रातः ४॥ बजे श्यामजी के मन्दिर में उसी स्वरूप ने आये दियो दीदार और आकर के पूछा, क्या आपको मेरी पहचान है तो उन्होंने तो सदा बांके बिहारी का ज्ञान और योगमाया में नित वृंदावन के सिवाय आगे की पहचान किसी ने दी ही नहीं थी और न इस दुनिया के किसी ग्रन्थों में लिखा था तो वह रोज नित वृंदावन के स्वरूप का ध्यान किशोर का धरते थे। यह भी स्वरूप किशोर तो था पर अति सुन्दर नूरमयी आवेश को देखकर यही मन में माना कि यह मेरे बांके बिहारी हैं इसलिए उन्होंने कह दिया कि आप मेरे खाविंद है तो तुरन्त उन्होंने कहा कि अच्छा, अगर मैं आपका खाविंद हूँ और आप मेरी अंगना हैं तो बताओ अपना घर कहां है कोई उत्तर न दे सके तब उन्होंने कहा अच्छा तो बताईये तुम कौन, आए कहां से, तुम्हारा खाविंद कौन है और तुम्हारा वतन कौन सा है। दृढ़ करके कहो–मैं बांके बिहारी नहीं हूँ। जब उन्होंने साफ कह दिया मैं बांके बिहारी हूं तब उन्होंने कह दिया, धनी ऐता ही जानत हम। हमें कुछ भी नहीं पता धनी न मुझे आपकी पहचान है, न मैं अपने आपको जानती हूँ। तब स्वयं उस शक्ति पारब्रह्म की जो आवेश स्वरूप यही पर श्यामा जी के मन्दिर में नौतनपुरी आगमन जिनके चरण कमल हुए सब निजधाम की। निजआत्म की, निजस्वरूप की, अद्वैत परमधाम की अद्वैत लीला की पहचान कराई, इश्क रबद की पहचान कराई, ब्रज रास में तुम राधिका के तन में थी और तुम्हारी इच्छा नहीं हुई। इस ब्रह्माण्ड में तुम्हारे तन का जो नाम है वह देवचन्द्र है पर न तो तुम राधिका हो और न तुम देवचन्द्र हो तुम परमधाम की

Nijanand App

श्यामा महारानी हो और तुम्हारे तन का नाम-बाई सुन्दर है और जो सारी आत्मायें परमधाम से उतरी हैं वह तुम्हारे अंग है। इसलिए अब वो सुन्दर साथ कहलाएगा।

हम आए हैं इतने काम,
ब्रह्मसृष्टि लेने घर धाम।'

जब तक उनको जगा नहीं लोगे। पहला हुक्म तुम्हें करता हूँ।

ल्याओं बुलाओ रूहअल्ला रूहें मेरी,
जो आशिक रबद किया,
इश्क वास्ते कईयों कहलाया हक।'

तब उन्होंने प्रण किया कि अच्छा धनी तो जब तक जो सुख आपने मुझे दिया है। सब ब्रह्मसृष्टियों को मैं जगा के नहीं लाती तो मैं भी आपकी अंगना नही हूँ। उसके बाद वो शक्ति जो परमधाम की सामने खड़ी श्याम जी के मन्दिर में बातें करती है वो है, हमारे प्राण-नाथ, अक्षरातीत, राज जी महाराज अल्लाताला पूर्ण ब्रह्म वो इस नश्वर जगत के देवचन्द्र रूपी तन में प्रवेश करते हैं और फिर गांगजी भाई ने उनको पहचान की और अपने घर ले गए, जहाँ इन्द्रावती की आत्म जो कि केशव ठाकुर के घर उनके लड़के मेहराज ठाकुर के तन में प्रवेश किए थी, पर इस ज्ञान को जानती नहीं थी। अपने बड़े भाई गोवर्धन ठाकुर के साथ उन्होंने आकर के मेहराज ठाकुर ने देवचन्द्र जी के चरणों में आकर ज्ञान सुना और सतगुरु धारण किए। उसमें प्राणनाथ नहीं थे। प्राण-नाथ तो एक ही है जो देवचन्द्र जी के तन में विराजमान थे और उस समय उन्होंने तारतम देते समय यह पहचान लिया कि यह इन्द्रावती की आत्म है और बाद में स्पष्ट उन्हें खुलासा कर दिया कि देवचन्द्र जी के तन को छोड़ने के बाद आगे बुद्धनिष्कलंक अवतार तेरे तन में जब हम बैठेंगे, तब वो लीला जाहिर होगी। परम-धाम का अखण्ड लौकिक ज्ञान जो आज दिन तक दुनियां तक पराशक्ति की वाणी नहीं आई वह तेरे मन में बैठकर जाहिर होगी। उस कहे अनुसार जब देवचन्द्र जी ने वह तन छोड़ दिया तो स्पेशल मेहराज ठाकुर जी को बुलाया जब कि कला जी के पास नौकरी करते थे और फिर बता दी फिर सारी बातें याद करा के और तन को छोड़ करके उनके तन में विराज-मान हो गए और जाहिर रूप से वह गादी बिहारी जी को दी गई परन्तु बिहारी जी के अत्याचार के कारण से मेहराज ठाकुर को हबसे जेल में जाना पड़ा जो कुरान में सबसे बड़ा निशान लिखा था कि जब दुनियां में आखिर जमा ईमाम मेंहदी आएगें तो हबसे की जेल में नजरबंद होगें और शास्त्र पुराणों में लिखा था कि जब बुद्धनिष्कलंक अवतार आएगें तो वो प्रमोदपुरी बैठकर प्रमोदे जाएंगे। तो कहे के अनुसार बिहारी जी ने जब वहां के राजा को उनके सेवा के इकट्ठे किए गए सामान के बारे में रिपोर्ट कर दी उनको कहां नजरबंद होन पड़ा। वहां इन्द्रावती की आत्म बिलख-बिलख कर जब धनी से बिलखती है, कलपती है, रोती है, अपना सर्वस्व कुर्बान कर देती है तब वो अक्षरातीत युगल स्वरूप ने आकर सामने दर्श दिए और वो ही हमारे प्राणनाथ युगल स्वरू है, अक्षरातीत हैं. जिन्होंने उनके तन में हब में प्रवेश किया उस दिन से वह बन गए प्राण नाथ, अक्षरातीत इमाम मेंहदी जो कि आक हरिद्वार में १७३५ में जबकि साका सालवा

Nijanand App

का शास्त्रों के हिसाब से पूर्ण हो चुका था। वहां पहुँचे हिन्दुओं के सारे धर्माचारी उनके केवल इसी प्रश्न का उत्तर न दे सके कि मेरे जीव को मुक्ति कैसे मिल सकती है। सब धर्मो ने अपने परमात्मा को १४ लोक की अन्दर की शक्तियों, देवी देवतों को ही इष्ट बताया भागवत वेद सब बताते हैं कि १४ लोक का महाप्रलय में नाश हो जाना है आखिर सब जितने भी आचार्य हिन्दू जगत के थे सबने अपनी हार मानकर शीश झुकाया और उनकी वाणी से उनको अक्षरातीत बुद्ध निष्कलंक अवतार माना। किसी ने उपाधि नहीं दी क्योंकि सत्य को कभी उपाधि नहीं दी जाती, सत्य के सामने झूठ सदा झुका करता है। नश्वर जगत के झूठे ज्ञान के जितने भी आचार्य थे उन्होंने अपना झूठ का आडम्बर जब दिल में महसूस किया और स्वामी जी की वाणी को सत्य माना तो अपना शीश झुकाया और माना कि आप ही सच्चिदानंद पारब्रह्म बुद्ध निष्कलंक अवतार हैं। उस दिन से साका सालवान की ध्वजा को हटाकर विज्ञियाभिनन्द बुद्धनिष्कलंक अवतार की जिनके ज्ञान में किसी प्रकार की अज्ञानता नहीं सत्य है, चित है आनन्द है। हम आपको वही अक्षरातीत मानते हैं और फिर १७३६ में कुरान के कहे मुताबिक औरंगजेब के दरबार दिल्ली में १२ मोमिनों ने जिनके सरदार लाल दास जी थे, काजीओं से शेख इसलाम से कुरान से सारी बातें फरदारोज हुईं और ६ दिन के भेद खोल देने के बाद शेख इसलाम जो कि नियुक्त हुआ था औरंगजेब की तरफ से कि जो वह रिपोर्ट देगा वही माना जाएगा उस दिन वहीं सिर झुका कर तीन बार कहा कि बेशक वह श्री प्राणनाथ है जिनके आप लशकर के आदमी हैं वह ईमाम मेंहदी दुनिया में जाहिर हो गए। हम स्वीकार करते हैं - स्वीकार करते हैं पर सुन्दर साथ जी हमारी अकल आज भी गोते खा रही है और वो सदा इन लेखकों को और ऐसे लेखों को पढ़ के या जो यह अगवे आज मठों में बड़े बड़े स्थानाधीश बने बैठे हैं वो कह दिया करते है महाप्रभु स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने देवचन्द्र जी को सतगुरु महाराज माना। झूठ है, व्यर्थ है और उनकी स्वयं की बुद्धि अभी धोखे खाती फिरती है। उनके लेखों को पढ़कर भ्रमित न होइये। सत्य को कोई उपाधि नहीं देता। पारब्रह्म अक्षरातीत कभी भी किसी का चेला नहीं होता। वो लोग जाकर कबीर जी की वाणी को पढ़े जहां कबीर जी ने कहा है-

जो पूत किसी का होत है,
वो साहिब किसी का नाहीं।
जो साहिब सबका होत है,
वह पूत किसी का नाहीं ॥

जो स्वयं पारब्रह्म अक्षरातीत प्राणनाथ सच्चिदानंद है वह किस को गुरू धारण करेगें फिर देवचन्द्र जी के तन में तो केवल श्यामा जी की आत्म बैठी थी और प्राणनाथ के तन में, मेहराज ठाकुर के तन में, महामति के तन में, पाँचों शक्तियां विराजमान हैं तो पाँचो शक्तियों के स्वरूप हकी सूरत हैं और देवचन्द्र जी तो केवल मलकी सूरत है। इस हिसाब से भी उनका दर्जा छोटा बनता है। यह सारे भ्रम मिटा कर उन तक भी हमारे संदेश पहुँचा दो कि वो भ्रम से बाहर निकलें अपनी आत्म को

शेष्ठ पृष्ठ २४ पर

Nijanand App